11-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

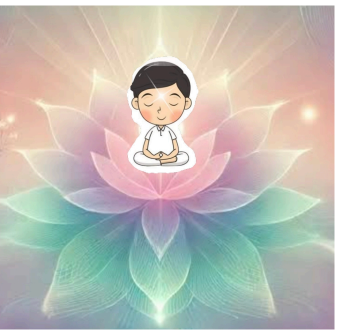

"मीठे बच्चे - इस अन्तिम जन्म में गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनो, एक बाप को याद करो, यही गुप्त मेहनत है"

None but Only One

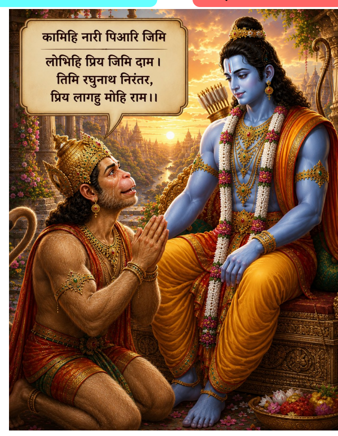

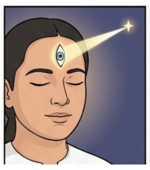

प्रश्नः-ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलते ही कौन सा कान्ट्रास्ट स्पष्ट अनुभव होता है?

कहने को भगवान को मानते थे, कब कहना भगवान की मानते थे चले थे डगर में अन्धेरों में गिरते, अभी ज्ञान की चाँदनी मिल गयी है हमें आप बाबा ऐसे मिले हैं कि जैसे नई जिन्दगी मिल गयी है...

उत्तर:-(1) भक्ति में भगवान को पाने के लिए कितना दर-दर भटक रहे थे, कितनी ठोकरें खा रहे थे। अभी हमें वह मिल गया। (2) साथ-साथ रहम आता मनुष्य बिचारे अभी तक भी भटक रहे हैं, रास्ता ढूँढ रहे हैं। बाबा ने हमें भटकने से छुड़ा दिया। हम बाबा के साथ जाने की तैयारी कर रहे हैं।

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

गीत:-आज अन्धेरे में हैं इंसान... Click

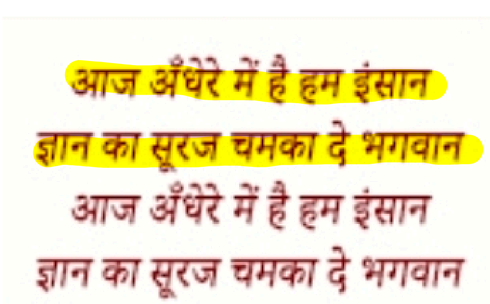

आज अँधेरे में है हम इंसान
ज्ञान का सूरज चमका दे भगवान
आज अँधेरे में है हम इंसान
ज्ञान का सूरज चमका दे भगवान

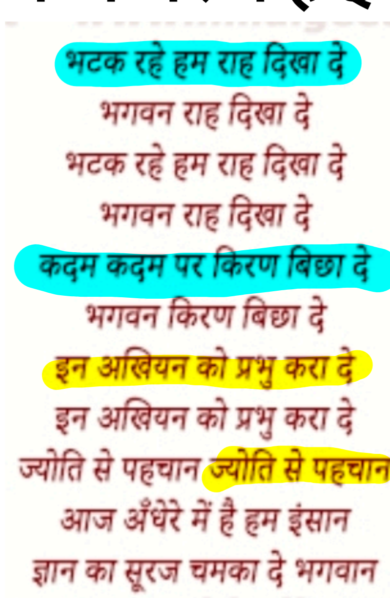

भटक रहे हम राह दिखा दे
भगवन राह दिखा दे
भटक रहे हम राह दिखा दे
भगवन राह दिखा दे
कदम कदम पर किरण बिछा दे
भगवन किरण बिछा दे
इन अखियन को प्रभु करा दे
इन अखियन को प्रभु करा दे
ज्योति से पहचान ज्योति से पहचान
आज अँधेरे में है हम इंसान
ज्ञान का सूरज चमका दे भगवान

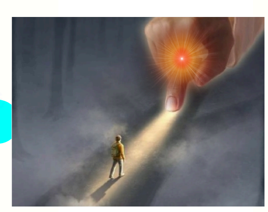

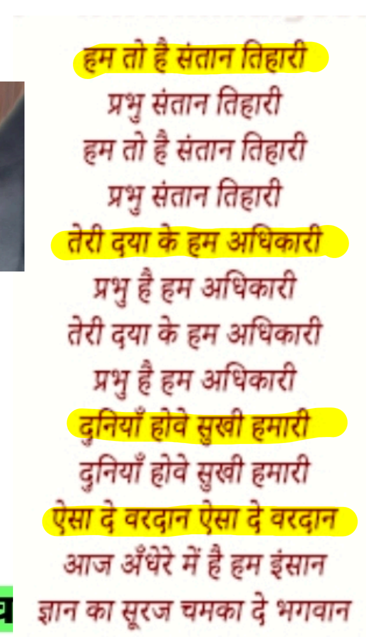

हम तो है संतान तिहारी
प्रभु संतान तिहारी
हम तो है संतान तिहारी
प्रभु संतान तिहारी
तेरी दया के हम अधिकारी
प्रभु है हम अधिकारी
तेरी दया के हम अधिकारी
प्रभु है हम अधिकारी
दुनियाँ होवे सुखी हमारी
दुनियाँ होवे सुखी हमारी
ऐसा दे वरदान ऐसा दे वरदान
आज अँधेरे में है हम इंसान
ज्ञान का सूरज चमका दे भगवान

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा

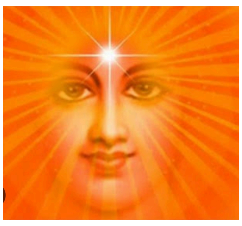

ओम् शान्ति। एक तरफ भक्त याद कर रहे हैं। दूसरे तरफ में आत्माओं को तीसरा नेत्र मिल चुका है अर्थात् आत्माओं को बाप की पहचान मिल चुकी है। वह कहते हैं हम भटक रहे हैं। अभी तुम तो नहीं भटकते हो। कितना फ़र्क है। बाप तुम बच्चों को साथ ले जाने के लिए तैयार कर रहे हैं। मनुष्य गुरूओं पिछाड़ी, तीर्थ यात्रा, मेले मलाखड़े आदि पिछाड़ी कितना भटक रहे हैं। तुम्हारा भटकना अब छूट गया है। बच्चे जानते हैं इस भटकने से छुड़ाने के लिए बाप आया हुआ है। जैसे कल्प पहले बाप ने आकर पढ़ाया था वा राजयोग सिखाया था, हूबहू ऐसे पढ़ा रहे हैं। बच्चे जानते हैं हम 5 विकारों पर जीत पा रहे हैं। कहा जाता है माया जीते जगत जीत। माया 5 विकारों रूपी रावण को कहा जाता है। माया दुश्मन ठहरी। माया धन सम्पत्ति को नहीं कहा जाता। लिखना भी है 5 विकारों रूपी रावण वा माया... तो मनुष्य कुछ अर्थ समझें। नहीं तो समझ नहीं सकते हैं। माया जीते जगत जीत। इसमें यादवों और कौरवों वा असुरों और देवताओं की कोई बात नहीं। स्थूल लड़ाई होती नहीं है। गाया जाता है योगबल से माया रावण पर जीत पाने से जगत जीत

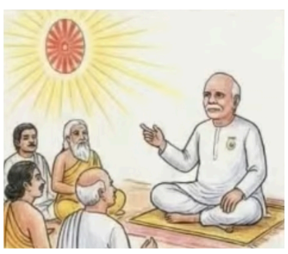

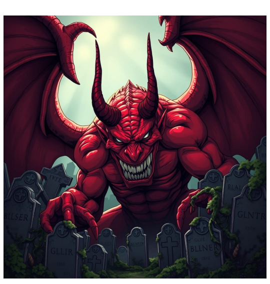

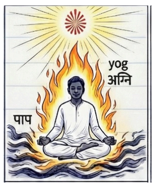

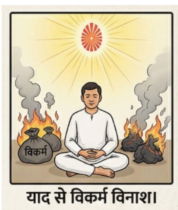

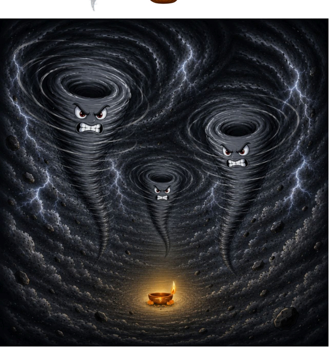

बनते हैं। तुम बच्चे जानते हो - जगत कहा जाता है विश्व को। विश्व पर जीत पहनाने लिए विश्व का मालिक ही आते हैं। वही सर्वशक्तिमान् है। यह तो बच्चों को समझाया गया है - बाप को याद करने से only ही पाप भस्म हो जाते हैं। मुख्य बात है याद की। Advantages याद करने से तुम्हारे से कोई विकर्म नहीं होगा और खुशी में रहेंगे। पतित-पावन बाप आये हैं पावन बनाने, तो फिर हम विकर्म क्यों करें। अपनी सम्भाल करनी है। बुद्धि तो मनुष्य को है ना। इसमें और कुछ लड़ने आदि की बात नहीं है, सिर्फ 5 विकारों को जीतने लिए बाप को याद करना बहुत सहज है। हाँ So, Be Prepared Mentally इसमें मेहनत लगती है, टाइम लगता है। माया दीवा बुझाने लिए घड़ी-घड़ी तूफान लाती है। बाकी इसमें लड़ाई की कोई बात नहीं है। वहाँ है ही देवताओं का राज्य। असुर कोई होते नहीं।

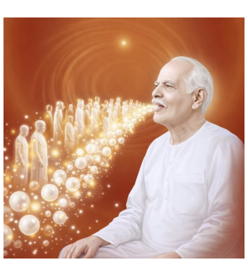

हम हैं ब्राह्मण, ब्रह्मा मुख वंशावली। जो ब्राह्मण कुल के हैं वही अपने को ब्राह्मण समझते हैं। रूहानी बाप हम रूहों को बैठ ज्ञान देते हैं। ज्ञान सागर, पतित-

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा

चढ़ाओ नशा... How lucky and Great we are...!

11-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

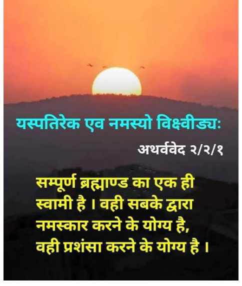

कापारी खुशी

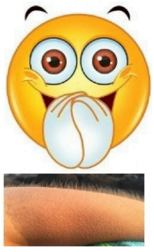

पावन सद्गति दाता एक ही है। वही स्वर्ग स्थापन करने वाला है। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। विलायत वालों को भी पता पड़ेगा, यह तो वही सिन्ध वाले ब्रह्माकुमार कुमारियाँ हैं जो कहते हैं पैराडाइज श्रीमत पर स्थापन कर दिखायेंगे। आत्मा कहती है ना - शरीर द्वारा। आत्मा सुनती है और डायरेक्शन पर चलती है। कल्प-कल्प बाप ही आकर युक्ति बतलाते हैं। बाप है गुप्त, किसको भी पता नहीं पड़ता है। कितने ढेर मनुष्यों को समझाते हैं फिर भी कोटो में कोई ही समझते हैं। तुम बच्चे अब समझते हो हमारा आलराउन्ड पार्ट है। बाप ने समझाया है तुम ही राज्य लेते हो और कोई ले न सके, सिवाए तुम भारतवासियों के, जो अभी अपने को हिन्दू कहलाते हैं। आदमशुमारी में भी हिन्दू लिख देते हैं। हम भल कुछ भी नाम दें, हम वास्तव में आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थे। वह दैवी धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट हो जाने कारण अपने को हिन्दू कह देते हैं। हिन्दू नाम क्यों पड़ा - यह भी कोई नहीं जानते। पूछना चाहिए भला यह तो बताओ तुम्हारा हिन्दू धर्म किसने स्थापन किया! यह तो हिन्दुस्तान का नाम है। कोई बता नहीं सकेंगे। तुम बच्चे जानते हो अब

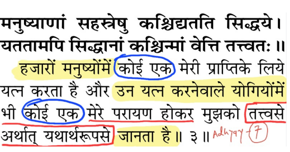
मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३ ॥

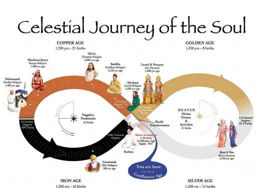

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

11-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय धर्म की स्थापना हो रही है। कहते हैं ब्राह्मण देवी-देवता नमः। ब्राह्मण हैं सर्वोत्तम नम्बरवन। वास्तव में स्वर्ग सतयुग को कहा जाता है। रामचन्द्र के राज्य को भी स्वर्ग नहीं कहा जाता। आधाकल्प है रामराज्य, आधाकल्प है आसुरी राज्य। यह सब दिल में धारण करना है। अभी हमको स्वर्ग में जाने के लिए क्या करना है? पवित्र तो जरूर रहना ही है। बाप कहते हैं - बच्चे काम महाशत्रु है, इन पर जीत पाकर पवित्र रहना है इसलिए कमल फूल की निशानी भी दिखाई है। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान बनना है। यह दृष्टान्त तुम्हारे लिए है। हठयोगी तो गृहस्थ व्यवहार में कमल फूल समान रह न सकें। वह अपना निवृत्ति मार्ग का पार्ट बजाते हैं। गृहस्थ व्यवहार में रह नहीं सकते, इसलिए घर बार छोड़ चले जाते हैं। तुम दोनों संन्यास की भेंट कर सकते हो। प्रवृत्ति मार्ग में रहने वालों का गायन है। बाप कहते हैं - गृहस्थ व्यवहार में रहते सिर्फ यह एक अन्तिम जन्म हिम्मत कर कमल फूल समान पवित्र रहो। भल अपने गृहस्थ व्यवहार में रहो। वह संन्यासी तो घरबार छोड़ जाते हैं। ढेर संन्यासी हैं जिन्हों को भोजन देना पड़ता है। पहले वह भी

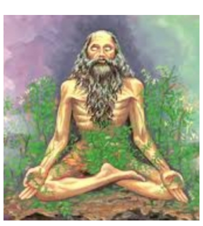
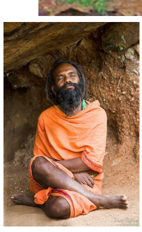

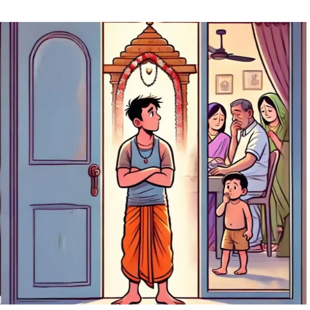

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

सतोप्रधान थे, अभी तमोप्रधान बन गये हैं। यह भी ड्रामा में उनका पार्ट है। फिर भी ऐसे ही होगा।

As Certain as Death

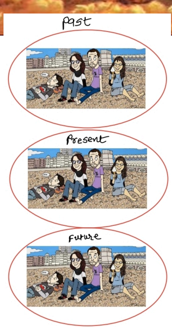

बाप समझाते हैं इस पतित दुनिया का विनाश तो होना ही है। थोड़ी-थोड़ी बात में ही एक दो को धमकी देते रहते हैं। "अगर ऐसा नहीं होगा तो बड़ी लड़ाई लग जायेगी।" तुम बच्चे समझते हो कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। शास्त्रों में लिखा है पेट से

Click

मूसल निकले, यह हुआ... फिर होली में स्वांग बनाते हैं। वास्तव में हैं यह मूसल, जिससे विनाश करते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं जो कुछ पास्ट हो चुका है वह फिर भी होना है। बनी बनाई बन रही... अभी तुम्हारी

चढ़ाओ नशा... वाह रे मैं...

बुद्धि में सारा राज़ है। सिर्फ कहने की बात नहीं। किसको भी दोष नहीं दे सकते। ड्रामा में पार्ट है।

तुमको सिर्फ बाप का पैगाम सुनाना है। यह ड्रामा तो अनादि अविनाशी है। भावी क्या चीज़ है, वह भी तुम समझ गये हो। यह कलियुग अन्त और सतयुग आदि का संगम नामीग्रामी है। इनको ही पुरुषोत्तम युग कहा जाता है। आजकल बच्चों को पुरुषोत्तम युग

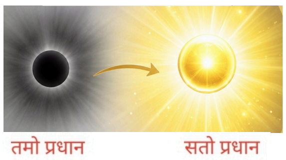

पर अच्छी रीति समझा रहे हैं। यह युग है उत्तम पुरुष बनने का। सभी सतोप्रधान उत्तम बन जायेंगे। अभी हैं तमोप्रधान कनिष्ट। इन अक्षरों को भी वाह रे मैं... तुम समझते हो। कलियुग पूरा हो सतयुग आयेगा फिर जय-जयकार हो जायेगा। कहानी सुनाई जाती है ना। यह है सहज ते सहज। झूठी कहानियाँ तो बहुत हैं। अब स्वयं भगवान बाप खुद बैठ समझाते हैं, भक्ति मार्ग में तुम मेरी महिमा गाते आये हो। अब प्रैक्टिकल में तुमको So, Value this Time अभी नही तो कभी नहीं रास्ता बताता हूँ - सुखधाम और शान्तिधाम का।

सद्गति को सुख गति, दुर्गति को दु:ख गति कहेंगे।

कलियुग में है दु:ख, सतयुग में है सुख। समझाने से Point of the Day सब समझेंगे। आगे चल समझते जायेंगे। समय बहुत थोड़ा है, मंजिल बहुत ऊंची है। कॉलेज में जाकर तुम समझायेंगे तो इस नॉलेज को अच्छी रीति समझेंगे।

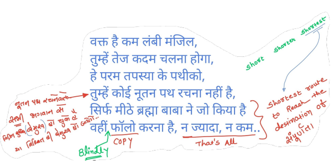

बरोबर यह ड्रामा का चक्र फिरता रहता है और कोई

Shiv भगवान उवाच:

दुनिया नहीं है। वह समझते हैं ऊपर में कोई दुनिया है इसलिए सितारों आदि तरफ जाते हैं। वास्तव में वहाँ कुछ है नहीं। गॉड इज़ वन, क्रियेशन इज़ वन। मनुष्य सृष्टि यही है। मनुष्य, मनुष्य ही हैं, सिर्फ देह के अनेक धर्म हैं। कितनी वैराइटी है। सतयुग में एक ही धर्म था, उसको कहा जाता है सुखधाम। कलियुग

One and only one

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M..

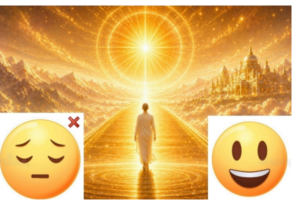

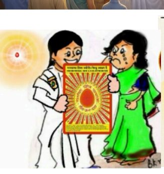

है दु:खधाम। सुख और दु:ख का खेल है ना। बाप थोड़ेही बच्चों को कब दु:ख देंगे। बाप तो आकर दु:ख से लिबरेट करते हैं। जो दु:ख हर्ता है, वह फिर किसको दु:ख थोड़ेही देंगे। (Simple Logic) अभी है रावण राज्य। मनुष्यों में 5 विकार प्रवेश हैं इसलिए रावण राज्य कहा जाता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी का राज़ (वाह रे मैं...) अभी तुम बच्चों की बुद्धि में आ गया है। रोज़ सुनते हो, यह बहुत बड़ी पढ़ाई है। (Highest of All) तो बाप समझाते हैं अभी बाकी थोड़ा समय है। उसमें बाप से पूरा वर्सा लेना है। (Coming soon...) धीरे-धीरे मनुष्य भी समझेंगे बरोबर ईश्वर का रास्ता तो यही समझाते हैं। दुनिया में और कोई भी ईश्वर को पाने का रास्ता नहीं बतलाते हैं। ईश्वर का रास्ता ईश्वर ही बताते हैं। तुम तो उनके बच्चे पैगाम देने वाले हो। कल्प पहले भी जो निमित्त बने होंगे वही अब बनेंगे और बनाते जायेंगे। बच्चों को (How humble my baba is...!) विचार सागर मंथन करना है। राय देनी चाहिए - बाबा हम समझते हैं यह चित्र होने चाहिए, इनसे मनुष्य अच्छा समझ सकते हैं। बाबा कम चित्र इसलिए कहते हैं क्योंकि कई सेन्टर्स बहुत छोटे-छोटे हैं। 5-7 चित्र भी मुश्किल रख सकते हैं।

बाबा कहते हैं घर-घर में गीता पाठशाला हो। ऐसे भी बहुत हैं एक कमरे में सब कुछ चलाते हैं। मुख्य चित्र रखे हों तो मनुष्यों को समझ मिले। आखरीन भगवान किसको कहा जाता है, उनसे क्या मिलता है? भगवान को बाबा कहा जाता है। बबुलनाथ बाबा नहीं कहेंगे। रूद्र बाबा नहीं कहेंगे। शिवबाबा नामीग्रामी है। बाबा कहते हैं यह वही कल्प पहले वाला ज्ञान यज्ञ है। बेहद के बाप शिव ने यज्ञ रचा है। ब्राह्मणों की रचना की है ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्मा में प्रवेश हो स्थापना की है। यह है ज्ञान - राजयोग का। और फिर यज्ञ भी है, जिसमें सारी पुरानी दुनिया की आहुति पड़ती है। एक वह ही बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है, ज्ञान सागर भी है। ऐसा और कोई है नहीं। आजकल यज्ञ रचते हैं तो चारों तरफ शास्त्र रखते हैं। एक आहुति का कुण्ड भी बनाते हैं। वास्तव में है - यह ज्ञान यज्ञ, जिससे उन्होंने कॉपी की है। यहाँ कोई स्थूल चीज़ आदि तो है नहीं। अभी तुम बच्चों को बेहद का बाप मिला है, बेहद का ज्ञान

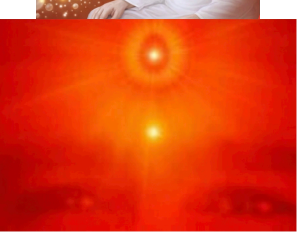

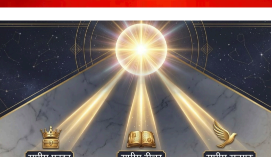

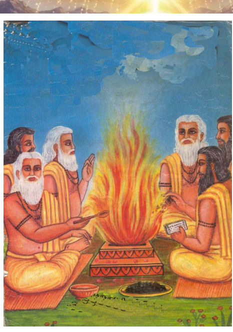

कहने को भगवान को मानते थे, कब कहना भगवान की मानते थे
चले थे डगर में अन्धेरों में गिरते, अभी ज्ञान की चाँदनी मिल गयी है
हमें आप बाबा ऐसे मिले हैं कि जैसे नई जिन्दगी मिल गयी है...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

So, Be Prepared

11-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मिला है और कोई यह जानते नहीं। बेहद की आहुति पड़नी है, यह तुम जानते हो। पुरानी दुनिया खत्म हो जायेगी। वह तो खुशी होती रहती कि रामराज्य स्थापन हो, यह तो बहुत अच्छा है। परन्तु वह तो जो स्थापन करेंगे वह अपने लिए ही करेंगे ना। मेहनत सब अपने लिए करेंगे। तुम जानते हो यह महाभारत लड़ाई भी इस यज्ञ से प्रज्जवलित हुई है। कहाँ वह हद की बातें, कहाँ यह बेहद की बातें। तुम अपने

Simple Math..

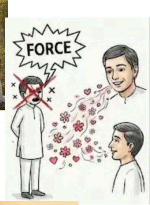

Multi Trillion dollar Question..

लिए ही पुरुषार्थ करते हो। जब तक बाप को न जाने, वर्सा मिल न सके। बाप ही आकर आत्माओं को शिक्षा देते हैं। तुम्हारा है सब गुप्त। आत्मा जो हिंसक बन गई है, उनको अहिंसक बनना है। किसी पर क्रोध भी नहीं करना है। 5 विकार जब दान दें तब ग्रहण छूटे, इनसे ही काले हो गये हैं। अब फिर सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण कैसे बनें - यह बाप बैठ समझाते हैं। इन लक्ष्मी-नारायण को ऐसा किसने बनाया? कोई गुरू मिला? यह तो विश्व के मालिक थे। जरूर पास्ट जन्म में अच्छे कर्म किये हैं तब अच्छा जन्म मिला। अच्छे कर्मों से अच्छा जन्म मिलता है। ब्रह्मा और विष्णु का कनेक्शन भी जरूर है। ब्रह्मा सो विष्णु एक सेकेण्ड में। मनुष्य से देवता

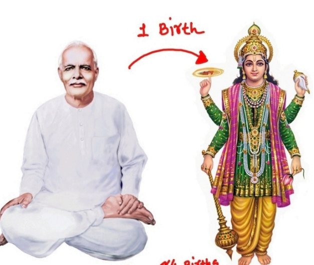

11-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बनते हैं, सेकेण्ड में जीवनमुक्ति इसको कहा जाता है। बाप के बने और जीवनमुक्ति का वर्सा पा लिया। जीवनमुक्त तो राजा प्रजा सब हैं। जो भी आने हैं उनको जीवनमुक्त बनना है। बाप तो समझाते हैं सबको। फिर है पुरुषार्थ करना, ऊंच पद पाने के लिए। सारा मदार है पुरुषार्थ पर। क्यों न पुरुषार्थ करते-करते हम ऊंच पद पायें। बाप को बहुत याद करने से बाप की दिल पर अर्थात् तख्त पर चढ़ जायेंगे। बाप कोई मेहनत नहीं देते हैं। अबलाओं से और क्या मेहनत करायेंगे। बाप की याद है भी गुप्त। ज्ञान तो प्रत्यक्ष हो जाता है। कहा जाता है इनका भाषण तो बहुत अच्छा है, परन्तु योग में कहाँ तक हैं? बाप को याद करते हैं? कितना समय याद करते हैं? याद से ही जन्म-जन्मान्तर के विकर्म विनाश होंगे। यह स्प्रीचुअल नॉलेज कल्प-कल्प रूहानी बाप शिव ही आकर देते हैं। और कोई भी ज्ञान दे नहीं सकते। अच्छा!

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

Exclusive Authority of Shiv baba

वक्त है कम लंबी मंजिल,
तुम्हें तेज कदम चलना होगा,
हे परम तपस्या के पथीको,
तुम्हें कोई नूतन पथ रचना नहीं है,
सिर्फ मीठे ब्रह्मा बाबा ने जो किया है
वहीं फॉलो करना है, न ज्यादा, न कम..

Short Shorter Shortest

Shortest route to Reach the destination

Copy

Blindly

That's All

11-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बाप दादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

Attention..!

1) अविनाशी ड्रामा के राज़ को बुद्धि में रख किसी को भी दोषी नहीं बनाना है। पुरुषोत्तम बनने का पुरुषार्थ करना है। इस थोड़े समय में बाप से पूरा वर्सा लेना है।

Attention Please..!

Take it Seriously..

2) डबल अहिंसक बनने के लिए कभी किसी पर क्रोध नहीं करना है। विकारों का दान दे सर्व-गुण सम्पन्न बनने का पुरुषार्थ करना है।

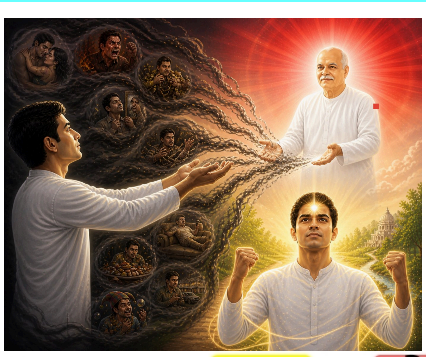

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument

11-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- सेकण्ड में सर्व कमजोरियों से मुक्ति प्राप्त कर मर्यादा पुरषोत्तम बनने वाले सदा स्नेही भव

Finale Achievement

Outcome/Output/Result

सजना, सजना, सजना, सजना
मैं तेरी, तू मेरा, दुनिया से क्या लेना
मैं तेरी, तू मेरा, दुनिया से क्या लेना
अब तो मुझे है, तुझे हर सुख देना
मैं तेरी, तू मेरा, दुनिया से क्या लेना

जैसे स्नेही स्नेह में आकर अपना सब कुछ न्यौछावर वा अर्पण कर देते हैं। स्नेही को कुछ भी समर्पण करने के लिए सोचना नहीं पड़ता।

M.M.M.....imp.

Point for Life time

जो तुम ना हो, रहेंगे हम नहीं
जो तुम ना हो, तो हम भी हम नहीं
न चाहिए कुछ तुमसे ज्यादा, तुमसे कम नहीं
My Aim is only you
Nothing Else

तो जो भी मर्यादायें वा नियम सुनते हो उन्हें प्रैक्टिकल में लाने अथवा सर्व कमजोरियों से मुक्ति प्राप्त करने की सहज युक्ति है - सदा एक बाप के स्नेही बनो।

most Easy path

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥

अर्थात्:-

बड़ी बड़ी किताबे पढ़कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले। अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

- कबीर

जिसके स्नेही हो, निरन्तर उसके संग में रहो तो रूहानियत का रंग लग जायेगा और एक सेकण्ड में मर्यादा पुरषोत्तम बन जायेंगे क्योंकि स्नेही को बाप का सहयोग स्वत: मिल जाता है।

स्लोगन:-निश्चय का फाउण्डेशन मजबूत है तो सम्पूर्णता तक पहुंचना निश्चित है।

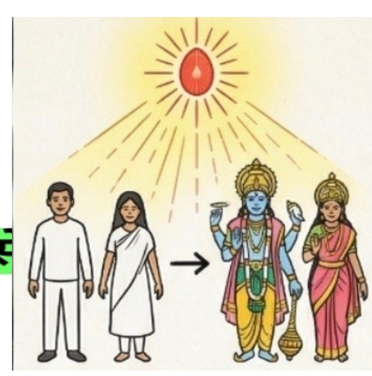

Points: ज्ञान योग धारणा

11-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

अव्यक्त इशारे -

Call of time/समय की पुकार

अब अपने दाता स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

वर्तमान समय सर्व आत्मायें भिखारी के रूप में भगवान से कुछ न कुछ मांग रही हैं। सभी के मुख में वा मन में यही रहता कि यह दे दो।

कोई धन के भिखारी हैं, कोई सहयोग के, कोई सम्बन्ध के, कोई थोड़े समय के लिए सुख-चैन के, कोई आराम वा नींद के, कोई फालोअर्स के भिखारी हैं,

Both संत, Political leader etc.
और अभी Social Media पर भी

Homework

आप दाता के बच्चे मास्टर दाता बन अपनी शुभ भावना की वृत्तियों से भिखारी आत्माओं की भूख मिटाओ।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Aug 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Aug 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

11.10 वरदान दो :

अमृतवेले चारों ओर के तमोगुणी वातावरण व वायब्रेशन के वायुमण्डल में प्राय: लोप स्थिति का समय होता है अर्थात् तमोगुण का प्रभाव दबा हुआ होता है। ऐसे समय पर सहज ही पुकार सुनकर उपकार होता है। पुकार सुनना भी सहज है और उपकार करना भी सहज है। वरदान लेना भी सहज है और दान देना भी सहज है क्योंकि वातावरण वृत्ति को बदलने वाला होता है। ऐसे समय पर, आप सर्व

समझा?

ये पक्का समझ लो..

94

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

Point to be Noted

वरदानी आत्माओं की स्वयं की स्थिति भी, बाप की विशेष वरदानों की छत्रछाया के कारण बाप के समान सम्पन्न और दातापन की होती है। ब्रह्मलोक के निवासी बाप विशेष रूप से ज्ञानसूर्य की लाइट और माइट की किरणें विशेष बच्चों को वरदान के रूप में देते हैं। इसालिए इस समय को 'ब्रह्म-मुहूर्त' का समय कहते हैं।

पुछो अपने आप से...

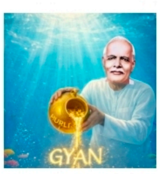

**Conditions Applied Very strictly

क्या इस समय पर आप स्वयं का सारे दिन की श्रेष्ठ स्थिति वा कर्म का 'मुहूर्त' निकालते हो ? जैसा मुहूर्त निकालना चाहो वह निकाल सकते हो। साथ-साथ अव्यक्त वतनवासी ब्रह्मा बाप भाग्यविधाता के रूप में अमृतवेले भाग्य अर्थात् अमृत बाँटते हैं। जितना भाग्य रूपी अमृत ब्रह्मा बाप द्वारा लेना चाहो वह ले सकते हो। लेकिन बुद्धि रूपी कलश अमृत धारण करने के योग्य हो। किसी भी प्रकार का विघ्न या रुकावट न हो। तो ऐसे समय पर लेना और देना साथ-साथ चलता है। वरदानी और महादानी दोनों पार्ट साथ-साथ चलते हैं। ऐसी स्थिति में स्थित होने वाली उपकारी आत्माओं को, आत्माओं की पुकार भी स्पष्ट सुनाई देगी। इतनी स्पष्ट सुनाई देगी जैसे कानों में कोई बात कह रहा है। भक्तों की आवाज़ भी सुनायी देगी। ऐसे समझेंगे जैसे यहाँ सचमुच कोई बुला रहे हैं। अमृतवेले विशेष भक्तों की पुकार सुनो, दु:खी आत्माओं के दु:ख की पुकार सुनो, प्यासी आत्माओं के प्रार्थना की आवाज़ सुनो, तो कभी भी नींद नहीं आयेगी। समझा ?